Economic & Cultural factors of Social Change

Scanned with CamScanner

9.1 प्रस्तावना

आर्थिक कारक सामाजिक परिवर्तन का महत्वपूर्ण कारक है। मार्क्स के अनुसार अर्थव्यवस्था अपने आप में एक स्वतंत्र कारक है। मनुष्य अपनी आवश्यकताओं एवं इच्छाओं की पूर्ति हेतु हमेशा प्रकृति के दोहन के नये–नये तरीकों का प्रयोग करता आया है। इससे प्रौद्योगिकी का विकास होता है। जिसके फलस्वरूप उत्पादन के साधनों में परिवर्तन होता रहता है। क्योंकि उत्पादन के साधन समाज की आधारभूत संरचना है। इसलिए जब इसमें परिवर्तन आता है तो उत्पादन के सम्बन्धों तथा उत्पादन की शक्तियों में भी परिवर्तन होता है। मार्क्स का मानना है कि आधारभूत संरचना में परिवर्तन आता है तो इससे अधिसंरचना अथवा आश्रित संरचना में भी परिवर्तन आता है। समाज के ऐतिहासिक विकास में एक ऐसा समय आता है, जब उत्पादन के सम्बन्ध तथा उत्पादन के साधन विकास का मार्ग अवरूद्ध करने लगते हैं। जिसके फलस्वरूप समाज मे वर्ग संघर्ष उत्पन्न होता है और मानव समाज एक स्तर से दूसरे ऐतिहासिक स्तर में प्रवेश करता है। मार्क्स का मानना है कि आर्थिक व्यवस्था ही सामाजिक व्यवस्था की आधारशिला है।

9.2 सामाजिक परिवर्तन एवं आर्थिक कारक

आर्थिक कारक सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आर्थिक कारक मानव जीवन के प्रत्येक पहलु को प्रभावित करता है। सामाजिक परिवर्तन के सम्बन्ध में मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं पर आर्थिक कारक के प्रभाव निम्नलिखित हैं:–

9.2.1 सामाजिक संस्थाओं पर आर्थिक कारकों का प्रभाव

आर्थिक कारक का सामाजिक संस्थाओं पर गहरा प्रभाव पडता है। भारत में परिवार, जाति व्यवस्था, जाति पंचायत, विवाह इत्यादि सामाजिक संस्थाओं पर आर्थिक विकास का अत्यधिक प्रभाव पड रहा हैं। आर्थिक विकास के फलस्वरूप उद्योग धन्धों, यातायात और संचार के साधनों, नौकरी के अवसरों तथा नगरों का विकास तीव्र गति से हुआ हैं। जिसके फलस्वरूप संयुक्त परिवार टूट रहे है। जिसका स्थान एकाकी परिवार ले रहे है। आर्थिक विकास से पूर्व अधिकांश आवश्यकताओं की पूर्ति परिवार के द्वारा ही हो जाया करती थी। लेकिन अब इन आवश्यकताओं की पूर्ति विभिन्न आर्थिक संसाधनों द्वारा की जा रही है। उद्योगीकरण तथा नगरों के विकास ने युवक एवं युवतियों को

Scanned with CamScanner

एक साथ काम करने के अवसर उपलब्ध कराए हैं। जिससे स्त्रियाँ भी घरों से निलकर पुरूषों के साथ नौकरी कर रही है। स्त्रियों में भी आत्मनिर्भरता बढ़ रही है। जिसके परिणामस्वरूप विलम्ब विवाह, प्रेम विवाह तथा अन्तर्जातीय विवाह का प्रचलन दिन प्रतिदिन बढ रहा है। अब तो एक कदम आगे बढ़कर "लिव इन रिलेशनशिप" अर्थात बिना विवाह के युवक एवं युवतियाँ एक साथ रह रहे हैं। बड़े शहरों में यह प्रचलन तेजी से पनप रहा है।

आर्थिक कारकों के कारण जाति व्यवस्था एवं वर्ग व्यवस्था में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहे हैं। उद्योगीकरण, नगरीकरण तथा संचार के साधनों में उन्नति तथा धन का अत्यधिक महत्व आदि ऐसे आर्थिक कारक हैं जिनके कारण जाति का परम्परागत स्वरूप बदल रहा हैं। उद्योगीकरण तथा नगरीकरण ने रोजगार के अवसरों में तीव्र वृद्धि की है तथा विभिन्न जातियों, समुदायों तथा धर्मों आदि के लोग को एक साथ काम करने का अवसर प्रदान किया है। जिससे जातिगत बन्धनों जैसे– छुआछुत, भेदभाव, उँच नीच की भावना में कमी आ रही है। आर्थिक विकास के फलस्वरूप विकसित औद्योगिक एवं नगरीय समाजों में जाति व्यवस्था के स्थान पर वर्ग व्यवस्था का प्रचलन दिन–प्रतिदिन बढ़ रहा है।

आर्थिक विकास के चलते शहरीकरण या नगरीकरण की प्रक्रियाओं का विकास हुआ है। गाँव के लोग नगरों के ओर पलायन कर रहे हैं। जिसका प्रभाव गाँव की सामाजिक–आर्थिक व्यवस्था पर भी पड रहा है। इसके साथ–साथ ग्रामीण परम्पराओं, मान्यताओं तथा मूल्यों का ह्रास हो रहा है। सामूहिकता की भावना क्षीण होती जा रही है। तथा व्यक्तिवादिता की भावना तेजी से विकसित हो रही है। महँगाई के बढने तथा मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति अथवा व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए परिवारों का आकार छोटा होता जा रहा है। आर्थिक कारकों के कारण जाति पंचायतों का प्रभाव भी कम हुआ है। इस प्रकार हम देखते है कि आर्थिक कारकों अथवा परिस्थितियों का सामाजिक संस्थाओं पर गहरा प्रभाव पडा है।

9.2.2 धार्मिक जीवन पर आर्थिक कारकों का प्रभाव

आर्थिक कारकों अथवा परिस्थितियों ने धार्मिक आस्थाओं, विश्वास एवं मूल्यों को गहनता से प्रभावित किया है। आर्थिक विकास के कारण बदलती हुई परिस्थितियों के कारण धार्मिक आस्थाओं विश्वास एवं मूल्यों का स्थान धन ने ले लिया है। विभिन्न कल–कारखानों एवं कार्यालयों में विभिन्न धर्मों के लोग एक साथ काम कर रहे हैं। एक

Scanned with CamScanner

साथ रह रहे हैं। और विभिन्न होटलों अथवा भोजनालयों में एक साथ भोजन करते हैं। भौतिकद के बढते महत्व के कारण धार्मिक अनुष्ठानों, त्यौहारों एवं आयोजनों में व्यक्ति की सहभागिता कम हुई है। व्यापार एवं वाणिज्य में विभिन्न धर्मों के लागों को एक–दूसरे पर निर्भर रहना पडता है। जिससे एक दूसरे के धर्म को समझने का अवसर मिलता है। तथा धार्मिक सहिष्णुता बढती है। धन के बढते प्रभाव के कारण प्राकृतिक शक्तियों में श्रद्धा तथा उनका भय दोनो कम हो गये हैं। लोग स्वर्ग और नरक की व्याख्या भी धार्मिक आधार के स्थान पर आर्थिक स्तर से करते है। जिसके पास धन है, वह स्वर्गीय आन्नद प्राप्त कर रहे हैं। और जो धन के अभाव में हैं, वह नरक भोग रहे हैं। पारलौकिक जीवन में लोगों का विश्वास कम हो रहा है। इस प्रकार लौकिक सुख की प्राप्ति व्यक्ति का लक्ष्य रह गया है। जहाँ परम्परागत एवं ग्रामीण समाज में धार्मिक आस्थाओं, विश्वास एवं मूल्यों की प्रधानता है। वही आर्थिक विकास के फलस्वरूप विकसित औद्योगिक एवं नगरीय समाजों में उनका स्थान भौतिक सुख सुविधाओं ने ले लिया है। आर्थिक विकास के साथ साथ भौतिकतावादी प्रवृत्ति सुदृढ होती जा रही है। इस प्रकार हम देखते हैं कि आर्थिक कारकों ने धार्मिक व्यवस्था को शिथिल कर भौतिक सुख–सुविधाओं को बढावा दिया है।

9.2.3. राजनीतिक व्यवस्था पर आर्थिक कारकों का प्रभाव

आर्थिक विकास ने जिन आर्थिक संस्थाओं एवं शक्तियों को जन्म दिया है, वे इतने महत्वपूर्ण एवं प्रभावी हैं कि वे राजनीतिक व्यवस्था को गहनता से प्रभावित कर रही हैं। राजनीतिक गतिविधियों को चलाने के लिए धन की आवश्यकता होती है। जिसकी पूर्ति जनता से एकत्रित किए गये चन्दे तथा आर्थिक संगठनों एवं पूँजीपतियों द्वारा उपलब्ध कराये गये धन से होती है। आर्थिक संगठनों एवं पूँजीपतियों का अपना स्वार्थ होता है। जिसका प्रयोग वे राजनीतिक इकाइयों को प्रभावित कर अपने लाभ की नीतियाँ बनवाने के लिए दबाव देते हैं। चार्ल्स बीयर्ड का कथन है कि संविधान एक आर्थिक मसविदा है। यह देखने में आया है कि जिस देश में बडे–बडे पूँजीपति होते हैं, वहाँ उनका राज्य पर अत्यधिक प्रभाव होता है। उदहाणार्थ– भारत में अम्बानी, टाटा, बिरला आदि। मार्क्स वर्ग संघर्ष को राजनीतिक संघर्ष बताता है तथा राज्य की उत्पत्ति को आर्थिक कारक मानता है। मार्क्स कहता है कि उत्पादन के प्राकृतिक अथवा भौतिक साधनों पर स्वामित्व पाने के लिए, दो वर्गों के सघर्ष को समाप्त करके राज्य की शक्ति का विकास हुआ है। उनका मानना है कि आर्थिक कारक समाप्त होते ही राज्य स्वयं समाप्त हो जाएगा। निष्कर्षतः कह सकते हैं कि आर्थिक ढाँचा ही समाज का वास्तविक आधार है।

Scanned with CamScanner

अन्य सभी सामाजिक संरचनाएँ इस पर आधारित है। आर्थिक संगठनों के प्रभाव से जितनी भी राजनीजिक नीतियाँ एवं कार्यक्रम बनाये जाते हैं उनका प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष लाभ आर्थिक संगठनों को ही मिलता है। और देश की जनसंख्या का एक बडा भाग, जिन्हें इन नीतियों एवं कार्यक्रमों की अत्यधिक आवश्यकता है, उससे वंचित रह जाता है। राजनीति में धन का प्रभाव दिनोदिन बढ़ता जा रहा है। सत्ता हथियाने के लालच में सांसदो की खरीद फरोक्त इसका जीवन्त उदहारण है। राजनीति में धनाढ्य लागों का वर्चस्व बढ़ता जा रहा है। न केवल राष्ट्रीय स्तर पर अपितु ग्राम पंचायतों के चुनावों में भी धन के बल पर राजनीतिक परिस्तिथियों को अपने पक्ष में किया जाता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि आर्थिक कारक किस प्रकार राजनीतिक व्यवस्था को गहनता से प्रभावित कर रहे हैं।

9.2.4. जनसंख्यात्मक पहलुओं पर आर्थिक कारकों का प्रभाव

आर्थिक कारक जनसंख्यात्मक पहलुओं को प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जनसंख्या के शारीरिक व मानसिक लक्षणों का आर्थिक कारकों एवं परिस्तिथियों से गहरा सम्बन्ध है। सामान्यतः धनी वर्ग के लोगों का स्वास्थ्य निर्धन वर्ग के व्यक्तियों से बेहतर होता है। उन्नत आर्थिक स्तर विभिन्न आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायक होता है। जो जनसंख्यात्मक ढाँचे को प्रभावित करता है। आर्थिक परिस्तिथियाँ जन्म दर एवं मृत्यु दर दोनों को प्रभावित करती है। निम्न आर्थिक वर्ग के लोग जनसंख्या वृद्धि में अपेक्षाकृत अधिक योगदान देते है। जिसका जनसंख्या वृद्धि पर सीधा प्रभाव पडता है, जो विभिन्न सामाजिक समस्याओं को जन्म देता है।

9.2.5. संस्कृति पर आर्थिक कारकों का प्रभाव

संस्कृति मानव जीवन का अभिन्न अंग है। किसी भी समाज की संस्कृति के स्वरूप निर्धारण में वहाँ की आर्थिक परिस्तिथियाँ एवं कारक महत्वपूर्ण रूप में उत्तरदायी होते हैं। संस्कृति से जुडे विभिन्न पहलुओं जैसे– खान–पान, रहन–सहन, शिष्टाचार के तौर तरीके, सोचने विचारने का ढ़ग, आदत एवं व्यवहार वहाँ की आर्थिक परिस्थितियों पर निर्भर करता है। इसी अवधारणा के आधार पर वेबलन एक वर्ग को दूसरे वर्ग से अलग करता है। आर्थिक परिस्थितियाँ ही सामाजिक स्तर का निर्धारण करती है। सामाजिक व्यवस्था से जुडे विभिन्न कार्यक्रमों, आयोजनों तथा त्यौहारों को मनाने के तौर–तरीके आदि भी आर्थिक स्थिति पर निर्भर करते हैं। समाज में प्रचलित दहेज एवं वधू–मुल्य

Scanned with CamScanner

जैसी प्रथाएँ आर्थिक महत्वकांक्षा का ही परिणाम है। संस्कृति का कोई भी पक्ष चाहे वह भौतिक हो अथवा अभौतिक, ऐसा नहीं है जो आर्थिक कारकों से प्रभावित न होता हो।

9.2.6. सामाजिक विघटन एवं आर्थिक कारक

आर्थिक विकास के फलस्वरूप उत्पन्न विभिन्न संस्थाएँ, शक्तियाँ एवं प्रक्रियाएँ समाज में विघटन के लिए महत्वपूर्ण रूप से उत्तरदायी है। जैसै– नगरीकरण एवं उद्योगीकरण की प्रक्रियाओं ने कई सामाजिक समस्याओं जैसे– मलिन बस्तियों का विकास, निवास स्थान की कमी, अपराध, वर्ग संघर्ष, आदि को जन्म दिया है। बढ़ती हुई आर्थिक महत्वकांक्षा के कारण व्यक्तिगत लाभ को बढावा मिला है। तथा सामूहिकता की भावना का ह्रास हुआ है। भारतीय समाज की विशेषता एवं पहचान परम्परागत संयुक्त परिवार, विश्वास एवं मूल्यों का विघटन हो रहा है। आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति न कर पाने की दशा में व्यक्ति के मानसिक रोग एवं चिन्ता मे वृद्धि हुई है। आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु माता–पिता दोनों के कार्यरत होने से बच्चों के समाजीकरण पर कुप्रभाव पडा है। बच्चों की उचित देख–रेख न होने के कारण बाल अपराध की घटनाओं की आवृत्ति में वृद्धि हुई है। इसी प्रकार भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, वेश्यावृत्ति, जालसाजी, चौरी, डकैती, अपहरण आदि भी आर्थिक कारणों से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुडे हुए हैं 1

9.3 सामाजिक परिवर्तन एवं सांस्कृतिक कारक

सामाजिक परिवर्तन के विभिन्न कारकों जैसे आर्थिक, प्रौद्योगीकीय, जनसंख्यात्मक, मनोवैज्ञानिक, जैविक, भौतिक अथवा भौगौलिक आदि के साथ–साथ सांस्कृतिक कारक भी परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हैं। परिवर्तन के सांस्कृतिक कारक को समझने के लिए सर्वप्रथम हमें संस्कृति की अवधारणा को स्पष्ट रूप से समझना होगा। संस्कृति शब्द का प्रयोग विभिन्न समाज विज्ञान में अलग–अलग अर्थों में किया गया है। समाजषस्त्रीय परिप्रेक्ष्य में संस्कृति के अर्थ को समझने की आवष्यकता है। जिसे हम विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गयी परिभाषाओं का विष्लेषण करके समझ सकते हैं।

मैकाइवर एवं पेज (Machiver and Page) के अनुसार– "संस्कृति हमारे दैनिक व्यवहार में कला, साहित्य, धर्म, मनोरंजन और आनन्द में पाये जाने वाले तत्व, रहन–सहन और विचार के ढ़ग से हमारी प्रकृति की अभिव्यक्ति हैं।"

Scanned with CamScanner

टायलर (Tylor) के अनुसार– "संस्कृति वह जटिल सम्पूर्ण व्यवस्था है जिसमें समस्त ज्ञान, विष्वास, कला, नैतिकता के सिद्धांत, विधि–विधान, प्रथाएँ एवं अन्य समस्त योजनाएँ सम्मिलित हैं जिन्हें व्यक्ति समाज का सदस्य होने के नाते प्राप्त करता है।"

मैलिनोव्स्की (Malinowski) के अनुसार– "संस्कृति प्राप्त आवष्यकताओं की एक व्यवस्था और उद्देष्यात्मक क्रियाओं की संगठित व्यवस्था है।"

बीरस्टीड (Biersstedt) के अनुसार– "संस्कृति वह सम्पूर्ण जटिलता है जिसमें वे सभी वस्तुएँ सम्मिलित है जिन पर हम विचार करते हैं, कार्य करते हैं और समाज का सदस्य होने के नाते अपने पास रखते हैं।"

रैडफील्ड **(Redfield)** के अनुसार – "संस्कृति ऐसे परम्परागत विचारों के संगठित समूह को कहते हैं जो कला एवं कलाकृतियों में प्रतिबिम्बित होते हैं तथा जो परम्परा द्वारा चलते रहते हैं। और किसी मानव समुह की विषेषता को चित्रित करते हैं।"

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट हो जाता है कि संस्कृति का अभिप्राय मानव जाति के रहन–सहन, आचार–विचार, भावनाएँ, विष्वास एवं विभिन्न प्रकार की उपलब्धियों के समग्र रूप से हैं। संस्कृति मानव जीवन से जुड़े हुए विभिन्न पहलूओं को सीखने की एक प्रक्रिया है जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होती रहती है।

संस्कृति के दो विषिष्ट पहलू है जो आपस में परस्पर घनिष्ठता से सम्बन्धित होते हैं। ऑगर्बन ने इन्हें भौतिक व अभौतिक संस्कृति के नाम से सम्बोधित किया है। भौतिक संस्कृति के अर्न्तगत समाज की भौतिक उपलब्धियों को रखा जा सकता है। ये मूर्त होती है, इन्हें हम स्पर्ष कर सकते हैं एवं देख सकते हैं। ये मनुष्यों द्वारा निर्मित होती हैं, जैसे– वायुयान, घडी, वस्त्र, भवन, यातायात के साधन, इत्यादि। मनुष्य ने अपनी आवष्यकताओं की पूर्ति हेतु अनेक औजारों, उत्पादनों तथा प्रौद्योगिकी का आविष्कार किया है। ये सभी उपलब्धियाँ भौतिक संस्कृति की श्रेणी में आती है। अभौतिक संस्कृति से तात्पर्य प्रथाओं, लोक–रीतियों, धर्म, समाजिक मूल्यों, कला, साहित्य, विष्वास, दार्षनिक विचारधाराओं तथा आदर्ष विज्ञान इत्यादि से हैं। अभौतिक संस्कृति अमूर्त तथा व्यक्तिनिष्ठ होती है। इसे हम न तो देख सकते हैं और न ही स्पर्ष कर सकते हैं। अभौतिक संस्कृति की अपेक्षा भौतिक संस्कृति में परिवर्तन अधिक तीव्र गति से होते हैं।

संस्कृति के विभिन्न तत्व अथवा आयाम सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को गहनता से प्रभावित करते हैं। संस्कृति के विभिन्न तत्वों जैसे विष्वास, संस्थाएँ, मूल्य, प्रथाएँ तथा

Scanned with CamScanner

सामाजिक सम्बन्ध आदि के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध होता हैं। संस्कृति के विभिन्न पक्ष जहाँ एक और हमें व्यवहार करना सिखते हैं अथवा समाजीकरण कर हमें समाज से अनुकूलन करने योग्य बनाते हैं वहीं दूसरी और हमारे व्यवहारों तथा सामाजिक क्रियाओं आदि पर नियत्रण भी रखते हैं। जैसे हमें कैसा व्यवहार करना चाहिए, हमारा रहन सहन कैसा होना चाहिए इत्यादि। सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में सांस्कृतिक कारको की भूमिका को हम कुछ प्रमुख आधारों जैसे परिवार, विवाह, धर्म तथा विज्ञान इत्यादि के आधार पर विस्तृत से चर्चा करेंगे।

9.3.1. सामाजिक संस्थाएँ एवं सामाजिक परिवर्तन

परिवार एवं विवाह संस्कृति के महत्वपूर्ण तत्व हैं। जो सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हैं। विवाह समाज की एक प्रमुख संस्था है, जो स्त्री–पुरुष के सम्बंधों को नियंत्रित करने के साथ–साथ वैधता प्रदान करती हैं। विवाह के नियम ही इस बात का निर्धारण करते है कि समाज में स्त्री–पुरुष के सम्बंध और उनका स्वरूप कैसा होगा। विवाह परिवार के निर्माण में सहयोग करता है। पि
बच्चों का समाजीकरण कर उन्हें सामाजिकता प्रदान करता है। यदि इन महत् 1
संस्थाओं के नियम बदलते हैं तो इनका सीधा प्रभाव सामाजिक सम्बंधों पर होगा तथा विवाह एवं परिवार का स्वरूप, संरचना तथा इनकी भूमिका को भी प्रभावित करेगा।

9.3.2. आर्थिक परिस्थितियाँ एवं सामाजिक परिवर्तन

संस्कृति का आर्थिक पक्ष भी सामाजिक परिवर्तन का महत्वपूर्ण कारक है। मार्क्स संस्कृति के अर्थिक पक्ष को सामाजिक परिवर्तन का मूलभूत आधार मानता है। वह सामाजिक संरचना को दो भागों में बांटकर देखते हैं– अधारभूत संरचना तथा अधिसंरचना अथवा आश्रित संरचना। समस्त उत्पादन प्रणाली को उन्होंने आधारभूत संरचना माना है और समाज के अन्य अंगों जैसे– धर्म परिवार, राज्य, आदर्ष, दर्षन इत्यादि को आश्रित संरचना कहा है। मार्क्स की मान्यता है कि उत्पादन प्रणाली ही समस्त सामाजिक व्यवस्था की आधारषिला है। अतः यदि आर्थिक व्यवस्था में कोई परिवर्तन आता है तो उससे समाज की अधिसंरचना में भी परिवर्तन आता है। उत्पादन के साधनों के आधार पर मार्क्स समाज को दो वर्गो में बांटकर देखते हैं तथा यह प्रमाणित करने का प्रयास करते हैं कि सामाजिक परिवर्तन वर्ग संघर्ष द्वारा ही संभव होता है। इसी अर्थ में उन्होंने अपने साम्यवादी घोषणापत्र में लिखा है "अभी तक के सभी समाजों का इतिहास वर्ग संघर्षों का इतिहास रहा है"। मार्क्स का मानना है कि जब तक समाज में वर्ग विभाजन है, समाज में षोषण की प्रक्रिया चलती रहेगी। क्योंकि

Scanned with CamScanner

यह विभाजन षोषण पर आधारित है। उसी तरह जब तक समाज में षोषण है संघर्ष की प्रक्रिया चलती रहेगी। इसी वर्ग संघर्ष की प्रक्रिया से समाज में परिवर्तन होता है।

9.3.3. धर्म एवं सामाजिक परिवर्तन

कुछ विचारकों ने यह प्रमाणित करने का प्रयास किया है कि सांस्कृतिक मूल्यों में परिवर्तन से न केवल समाज एवं संस्कृति में परिवर्तन होता है अपितु आर्थिक व्यवस्था में भी परिवर्तन होता है। इन विचारकों में मैक्स वैबर का नाम उल्लेखनीय है। उन्होंने अपनी पुस्तक **The Protestant Ethics and the Spirit of Capitalism (1959)** में यह प्रमाणित करने का प्रयास किया है कि पाष्चात्य देषों में पूँजीवादी अर्थ व्यवस्था के विकास में प्रोटेस्टेंट आचार संहिता की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। मैक्स वेबर ने विष्व के छः बडे धर्मो हिन्दू, बौद्ध, ईसाई, इस्लाम, कन्फूषियस तथा यहूदी का विस्तृत अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि समाजिक धटनाओं, सामाजिक संगठन एवं आर्थिक व्यवस्था के निर्धारण में धर्म की भूमिका सबसे अधिक रही है। भारत के संदर्भ में पूँजीवाद के विकसित न होने में धर्म का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। क्योंकि हिन्दू धर्म की प्रवृति मानवतावादी रही है जो परम्पराओं पर आधारित है। लेकिन पाष्चात्य सभ्यता के सम्पर्क में आने तथा प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास ने धार्मिक मान्यताओं को षिथिल कर दिया है। जिसके फलस्वरुप भारत में भी पूँजीवाद का विकास होता दिख रहा है। धार्मिक मूल्य एवं मान्यताएं अन्य प्रकार से भी सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देती हैं। भिन्न धार्मिक सम्प्रदायों के मध्य सम्पर्क तथा संघर्ष दोनों ही समाजिक परिवर्तन लाने में सहायक होते हैं। यदि हम भारतीय इतिहास को देखें तो पता चलता है कि विदेषी आक्रमणकारियों एवं षासकों के धर्मो का समाजिक परिवर्तन में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इसके साथ–साथ विभिन्न धर्मो एवं सम्प्रदायों जैसे बौद्ध, जैन, सिक्ख आदि के उदय होने से न केवल भारतीय समाज को अपितु विष्व के समाजों को गहनता से प्रभावित किया है।

9.3.4. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा सामाजिक परिवर्तन

भौतिक संस्कृति में जो भी परिवर्तन आया है उसके लिए विज्ञान की उन्नति प्रमुखता से उत्तरदायी है। क्योंकि विज्ञान भी संस्कृति का महत्वपूर्ण तत्व है। इसलिए हम कह सकते है कि संस्कृति के विकास ने मानव जीवन में अभूतपूर्व परिवर्तन लाया है। विज्ञान के विकास ने मानव को तार्किक और अन्वेषी बना दिया है, जिससे हमारे धार्मिक विश्वासों, विचारों एवं जीवन के उद्देश्यों में परिवर्तन आया हैं और इस परिवर्तन ने सम्पूर्ण सामाजिक संरचना, मूल्यों एवं प्रतिमानों आदि को प्रभावित किया है। ज्ञान और विज्ञान की प्रगति ने सामाजिक परिवर्तनों को गति प्रदान की है। परिवर्तन के सांस्कृतिक कारक के संदर्भ में मैक्स वेबर का यह विचार उल्लेखनीय है कि विज्ञान के

Scanned with CamScanner

विकास ने प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में मूलभूत परिवर्तन लाया है। जिसके माध्यम से सामाजिक, आर्थिक एवं नौकरशाही की व्यवस्था में गहन परिवर्तन आया है।

9.3.4. सांस्कृतिक–प्रसार एवं पर–संस्कृतिग्रहण तथा सामाजिक परिवर्तन

परिवर्तन के सांस्कृतिक कारकों के संदर्भ में मानवशास्त्रियों की यह मान्यता है कि सांस्कृतिक–प्रसार एवं पर–संस्कृतिग्रहण की प्रक्रिया से समाज में परिवर्तन आता है। इस संदर्भ में एम० एन० श्रीनिवास की पश्चिमीकरण की अवधारणा विशेष रूप से उल्लेखनीय है। भारत में अंग्रेजी शासन के कारण हमारे वैचारिक दृष्टिकोण, राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्था, खान–पान, रहन–सहन, जाति व्यवस्था, शिक्षण पद्धति तथा भाषा इत्यादि में अत्याधिक परिवर्तन आए हैं। मानवशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में इन प्रक्रियाओं को हम सांस्कृतिक–प्रसार एवं संस्कृति संक्रमण की प्रक्रिया मानते हैं। यातायात, संचार के माध्यमों एवं शिक्षा के विकास से विश्व स्तर पर संस्कृति संक्रमण की प्रक्रिया तीव्र हुई है। प्रौद्योगिकी के विकास ने सामाजिक परिवर्तन के सांस्कृतिक कारकों के लिए एक उत्प्रेरक अभिकर्ता के रूप में कार्य किया है। यूरोप में बोर्दियो और दरिदा जैसे विचारकों ने भाषा को सामाजिक परिवर्तन का सशक्त कारक माना है। ऐन्थनी गिडेन्स सांसकृतिक कारकों को एक बृहत् रूप में देखते हैं। इन कारकों में नेतृत्व ... महत्वपूर्ण कारक है। विश्व इतिहास में व्यक्तिगत रूप से विभिन्न धार्मिक ... और सैन्य नेताओं ने सामाजिक परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है।

9.4 सारांश

समाजिक परिर्वन एक सार्वभौमिक एवं निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में आर्थिक एवं सांस्कृतिक कारक महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हैं। आर्थिक एवं सांस्कृतिक कारक मानव जीवन के प्रत्येक पहलु जैसे सामाजिक संस्थाओं, मूल्यों, प्रतिमानों, धार्मिक विचारों एवं मान्यताओं तथा राजनीतिक व्यवस्था इत्यादि को गहनता से प्रभावित करते हैं। सांस्कृतिक–प्रसार एवं पर–संस्कृतिग्रहण की प्रक्रिया जैसे पश्चिमीकरण, आधुनिकीकरण आदि ने भारतीय परम्परागत संस्थाओं, मूल्यों, प्रतिमानों, धार्मिक विचारों एवं मान्यताओं इत्यादि को शिथिल कर दिया हैं। आर्थिक विकास के फलस्वरूप उत्पन्न विभिन्न संस्थाएँ, शक्तियाँ एवं प्रक्रियाएँ समाज में विघटन के लिए महत्वपूर्ण रूप से उत्तरदायी है। जैसै– नगरीकरण एवं औद्यौगिकरण की प्रक्रियाओं ने कई सामाजिक समस्याओं जैसे– मलिन बस्तियों का विकास, निवास स्थान की कमी, अपराध, वर्ग संघर्ष, आदि को जन्म दिया है। अतः हम समाजशास्त्रियों अथवा समाज के विद्यार्थियों के रूप में सामाजिक परिवर्तन, इसके स्रोतों एवं कारकों का गहन अध्ययन कर समझने की आवश्यकता है। जिससे हम परिवर्तन से उत्पन्न समाजिक समस्याओं को समझ कर उनका समुचित समाधान प्रस्तुत कर सकें।

Scanned with CamScanner